13

पवित्र आत्मा द्वारा निरुत्तर किया जाना

(यूहन्ना 16)

''तौभी मैं तुम से सच कहता हूं, कि मेरा जाना तुम्हारे लिए अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक तुम्हारे पास न आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा। और वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करेगा। पाप के विषय में इसलिए कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते। और धार्मिकता के विषय में इसलिए कि मैं पिता के पास जाता हूं, और तुम मुझे फिर न देखोगे: न्याय के विषय में इसलिए कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है।

''मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते''
(आयतें 7-12)।

अपनी मृत्यु से पहले गुरुवार की रात अटारी वाले कमरे में अपने प्रेरितों को जो एक महत्वपूर्ण सच्चाई यीशु ने बतानी चाही वह यह थी कि वह उनके पास पवित्र आत्मा भेज रहा है। पवित्र आत्मा ने उन्हें उनके भावी कार्य के लिए आवश्यक सहायता देनी थी। वास्तव में यीशु इसी लिए जा रहा था ताकि पवित्र आत्मा आ सके। थोड़ी ही देर के बाद, यीशु के कलीसिया पर प्रभु के रूप में शासन आरम्भ करने पर (प्रेरितों 2:36), पवित्र आत्मा ने सिखाने और अगुआई देने का अपना काम आरम्भ करना था। इन तथ्यों के प्रकाश में यीशु का जाना प्रेरितों के लाभ के लिए था ताकि पवित्र आत्मा आकर अपने काम को आरम्भ कर सके। प्रेरितों को उसकी आवश्यकता थी और बिना उसके संसार का उद्धार नहीं हो सकता था।

पवित्र आत्मा ने आकर, तिहरे कार्य के साथ निरुतर करने की सेवकाई में लग जाना था। (1) इसमें प्रेरितों अर्थात मसीह के चेलों को आशीष देने। (2) इसमें हमारे प्रभु के पृथ्वी पर के जीवन और मृत्यु की सच्चाई की पुष्टि करनी थी। (3) यह वह माध्यम होना था जिसके द्वारा गैर मसीही लोग मन फिरा सकते थे, ऐसा मन फिराव जो परमेश्वर के साथ वाचा के सम्बन्ध में ले जाता है। यूहन्ना 16:7-12 में यीशु ने विशेष रूप में इस बात को प्रकाशमान किया कि पवित्र आत्मा किस प्रकार से उसकी शिक्षाओं, मृत्यु और पुनरुत्थान के सम्बन्ध में संसार को निरुत्तर करेगा।

विद्रोह

आत्मा ने गैर मसीही संसार को पाप के विषय में निरुत्तर करना था। यीशु ने कहा, ''और वह आकर संसार को पाप ...'' विषय में निरुत्तर करेगा (16:8)। वह संसार को उसे ठुकराने की पाप की वास्तविकता और दोष से निरुत्तर करता है। सही और गलत के संसार के अपने मानक

हैं। यह धार्मिकता को कम करके पाप को बढ़ावा देता है। यह पाप को दण्डित करने के बजाय इसकी स्वीकृति देता है और इसमें यीशु को स्वीकार करने के बजाय उसे क्रूस पर चढ़ाना है। चार्ल्स आर. अर्डमैन ने इस सच्चाई पर विचार किया है:

> इसका अर्थ यह नहीं है कि अविश्वास पाप है; बेशक यह पाप ही है पर इसका अर्थ यह है कि पवित्र आत्मा संसार को इसके मसीह को ठुकराने के आधार या प्रमाण पर पापी होने का दोष लगाएगा। मसीह में विश्वास न करना पाप है; पर यहां जो सच्चाई बताई जाती है वह यह है कि मसीह को ठुकराना व्यक्ति के पापी होने को दिखाता है। मसीह भला, पवित्र और शुद्ध है; उसे ठुकराने का अर्थ भलाई और पवित्रता और शुद्धता और प्रेम का विरोधी होने के कारण अपने आपको दोषी ठहराना है। जब मसीह का प्रचार किया जाता है तो वह चरित्र की कसौटी का पत्थर बन जाता है।[1]

परमेश्वर की प्रेरणा पाए प्रेरितों और परमेश्वर की प्रेरणा से दिए पवित्र शास्त्र के द्वारा पवित्र आत्मा ने संसार को न केवल पाप की वास्तविकता बल्कि पाप की विनाशकारी प्रकृति को भी दिखाना था। उसने यह पहचान करानी थी कि पाप क्या है, इसके स्वभाव को स्पष्ट करना था और इस बात को खोलकर बताना था कि यह कहां तक जाता है।

यीशु ने कहा, ''और वह आकर संसार को पाप ... के विषय में निरुत्तर करेगा। पाप के विषय में इसलिए कि वह मुझ पर विश्वास नहीं करते'' (16:8, 9)। हर प्रकार के पाप को व्यवस्था या परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ने के रूप में वर्णित किया जा सकता है। परन्तु यीशु की तरह ही हम कह सकते हैं कि सबसे बड़ा पाप उसे अर्थात परमेश्वर के पुत्र को ठुकराना है, जिसे परमेश्वर का वचन और उद्धार का उसका मार्ग बताने के लिए हमारे पास भेजा गया। यह भयंकर पाप है। यीशु के चले जाने के बाद पवित्र आत्मा ने यीशु की कही बातों को, उसके किए कामों को और उस उद्धार को जो वह संसार में लाया था, याद दिलाना था। जिन्होंने मसीह के संदेश और उसकी हस्ती को नकारा उन्होंने अपने आपको दोषी पाना था। प्रेरितों और परमेश्वर की प्रेरणा पाए अन्य लोगों के द्वारा काम करते हुए आत्मा ने इसी सच्चाई की पुष्टि की करनी थी।

धार्मिकता

इसके अलावा आत्मा ने संसार को धार्मिकता के विषय में निरुत्तर करना था। यीशु ने कहा, ''और वह आकर संसार को पाप *और धार्मिकता* ... के विषय में निरुत्तर करेगा'' (16:8)। पवित्र आत्मा ने संसार को बताना था कि सच्ची धार्मिकता क्या है और यह साबित करना था कि यीशु, जिसे उन्होंने क्रूस पर चढ़ा दिया था, यीशु परमेश्वर का वह धर्मी जन था। उसने उन्हें जो धार्मिकता के इच्छुक हैं परमेश्वर के साथ सही सम्बन्ध में ले जाकर सच्चे मन वाले लोगों को विश्वास की धार्मिकता में अगुआई करनी थी। ऐसी धार्मिकता परमेश्वर की आज्ञाओं में चलने से आती है। इसे पाने और इसमें बने रहने के लिए व्यक्ति के लिए इसमें चलना और इसमें बने रहना आवश्यक है। संसार को परमेश्वर की ओर से भेजी गई सच्चाई देकर आत्मा ने इन अद्भुत उद्देश्यों को पूरा करना था।

हमारे प्रभु ने प्रेरितों को समझाया कि संसार को ''धार्मिकता के विषय में'' कायल करना

आवश्यक है ''इसलिए कि मैं पिता के पास जाता हूं और तुम मुझे फिर न देखोगे'' (16:10, 11)। उसने प्रेरितों को और संसार को दिखा दिया था कि धार्मिकता क्या है। यीशु ने चाहे इसका प्रचार करने और इसे जीने के लिए यहां नहीं होना था पर लिखित वचन का इस्तेमाल करते हुए पवित्र आत्मा ने सिखाने की अपनी इस भूमिका को निभाना था। संसार ने यीशु को अधर्मी जानकर ठुकरा दिया था, पर आत्मा ने उसे मरे हुओं में से उसके जी उठने और स्वर्ग में उसके उठाए जाने का प्रचार करने के द्वारा उसकी धार्मिकता की पुष्टि करनी थी। उसने पिता के दाहिने हाथ मध्यस्थ अर्थात सिफ़ारिश करने वाले के रूप में यीशु के काम की घोषणा करनी थी।

प्रतिफल

तीसरा, पवित्र आत्मा ने संसार को न्याय के विषय में निरुत्तर करना था। यीशु ने कहा, ''और वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता *और न्याय* के विषय में निरुत्तर करेगा'' (16:8)। आत्मा ने संसार को वर्तमान न्याय और भविष्य में होने वाले न्याय के बारे में बताना था। यीशु ने प्रचार किया न्याय आने वाला है: ''अब इस जगत का न्याय होता है, अब इस जगत का सरदार निकाल दिया जाएगा'' (12:31)। उसने आने वाले अन्तिम अर्थात अनन्त न्याय की भी घोषणा की (12:48; मत्ती 25:34-46)। आत्मा का कुछ काम संसार को ऐसे ही संदेशों अर्थात ऐसे ही संदेश प्रकट करना था। परमेश्वर अपने ठहराए हुए दिन पर हर किसी को हिसाब देने के लिए बुलाएगा और संसार को इस सच्चाई का सामना करना पड़ेगा। नहीं तो पापी लोग जवाबदेही की अवधारणा को नज़रअन्दाज़ कर देंगे। आत्मा की गवाही के द्वारा यह संदेश संसार के सभी खोए हुए लोगों को बताया जा सकता है।

पवित्र आत्मा लोगों को ''न्याय के विषय में'' निरुत्तर करने आ रहा था, ''इसलिए कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है'' (16:11)। अपने धर्मी जीवन, पाप के लिए अपनी मृत्यु और अपनी शिक्षाओं में यीशु ने संसार का न्याय कर दिया। उसने उन सब के साथ जो अपने सरदार के पीछे चलते थे अर्थात अंधकार के हाकिम का न्याय किया। यह न्याय स्पष्टतया यीशु के जीवन और क्रूस पर उसकी मृत्यु में घोषित किया गया। तौभी संसार के न्याय का संदेश संसार के पहले से स्पष्ट रूप में रखा गया था। आत्मा ने आकर इसी काम को करना था।

सारांश

पवित्र आत्मा के आने के बारे में प्रेरितों के साथ अपनी बातचीत में यीशु ने अपनी टिप्पणियां उन्हीं बातों तक सीमित रखीं कि पवित्र आत्मा आकर संसार अर्थात उन लोगों के लिए जो परमेश्वर से दूर हैं क्या करेगा। उसने उन्हें तीन महत्वपूर्ण क्षेत्र याद दिलाए जिनमें संसार का सामना किया जाना था: पाप, धार्मिकता और न्याय और प्रतिफल। संसार के लोगों को परमेश्वर से उनके अलग होने, परमेश्वर के सामने धार्मिकता की उनकी आवश्यकता और परमेश्वर के प्रति उनकी जवाबदेही के बारे में बताया जाना आवश्यक है।

इन बातों को ध्यान में रखते हुए आज पवित्र शास्त्र में गैर मसीही लोगों को क्या बुलाया जाना चाहिए? खोए हुए व्यक्ति के लिए क्या सुनना आवश्यक है। यीशु ने उसे एक ही वाक्य में संक्षिप्त कर दिया: ''और वह आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में

निरुत्तर करेगा। पाप के विषय में इसलिए कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते। और धार्मिकता के विषय में इसलिए कि मैं पिता के पास जाता हूं, और तुम मुझे फिर न देखोगे: न्याय के विषय में इसलिए कि संसार का सरदार दोषी ठहराया गया है'' (16:8-11)।

''कितने दिनों के बाद फेलिक्स अपनी पत्नी द्रुसिल्ला को, जो यहूदिनी थी, साथ लेकर आया; और पौलुस को बुलवाकर उस विश्वास के विषय में जो मसीह यीशु पर है, उस से सुना। और जब वह धर्म और संयम और आने वाले न्याय की चर्चा करता था, तो फेलिक्स ने भयमान होकर उत्तर दिया, कि अभी तो जा: अवसर पाकर मैं तुझे फिर बुलाऊंगा'' (प्रेरितों 24:24, 25)।

''किसी अविश्वासी को पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुत्तर करना मानवीय योग्यता से पाप है। अदालत के सामने उसे लाने के लिए पर्याप्त प्रमाण होने पर उसके किसी विशेष पाप के लिए दोषी ठहराना तो सम्भव है; पर उसे उससे भी गम्भीर तथ्य को समझाना कि वह एक पापी, मन का बुरा और दण्ड के योग्य है क्योंकि उसने मसीह में विश्वास नहीं किया, बिल्कुल दूसरी बात है। किसी व्यक्ति को नैतिकता के किसी मानक तक लाना इतना कठिन नहीं है; क्योंकि लगभग हर व्यक्ति के आदर्श होते हैं जो किसी न किसी हद तक नैतिक नियम के साथ मेल खाते हैं। उसमें उसे शर्मिंदा करने वाला विवेक पैदा करना कि उसका अपने आप में धर्मी होना परमेश्वर की धार्मिकता के बेदाग वस्त्र की तुलना में गन्दे चिथड़ों की तरह है, किसी साधारण समझ के साथ प्रभावित नहीं हो सकता।''[2]

टिप्पणियां

[1]चार्ल्स आर. अर्डमैन, *द गॉसपल ऑफ़ जॉन: ऐन ऐक्सपोज़िशन* (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिन्सटर प्रैस, 1946), 145. [2]मैरिल सी. टैनी, *जॉन: द गॉसपल ऑफ़ बिलीफ़* (ग्रैंड रैपिडस, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1948), 237.